जय श्रीजमुने कलिमल हारिणी

(श्रीश्रीयमुना देवी महात्म्य)

श्रीश्रीमाँ सर्वाणी

अखिल लीलामय परम पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण का अव्यय, नित्य अक्षयधाम, परमरमणीय गोलोकधाम के नाम से प्रसिद्ध है। उसी गोलोक में गिरिराज गोवर्धन विराजमान हैं। उसी स्थान पर गोपगणों से परिवेष्टित वसंतकालोचित आचरणयुक्त सुनिपुण गोपियाँ एवं गो-गण अक्षय पद पर अधिष्ठित हैं। कल्प-पादप के लता-जाल के तले उसी दिशा में दिव्य रासमंडल सर्वदा विमंडित रहता है। उसी स्थान पर अनंत लहरों से युक्त यमुना प्रवाहित हो रही है। उसके तट के सोपान वैदुर्यादि रत्न जाल की श्रेणियों से अत्युज्ज्वल है एवम् इस यमुना का जल स्वच्छंद प्रवाहित है। इस मनोहर यमुना तट पर दिव्य वृक्ष एवम् लताओं के मध्य वृंदावन विराजित है। उसी सुशीतल यमुना तीर पर सहस्त्रदल कमल के पराग इधर-उधर छिटककर मृदुमंदगामी सुगंध वहन करते हुए पर्याप्त रूप से निरन्तर प्रवाहित हो रहे हैं। इसी वृंदावन के बत्तीस वन में भगवान श्रीकृष्ण का निज निकुंज अवस्थित है।

महानदी यमुना

एकबार श्रीकृष्ण ने नदी श्रेष्ठ यमुना को गोलोक के वृंदावन में आने का आदेश दिया। तब यमुना द्वारा श्रीकृष्ण की प्रदक्षिणा कर वापस लौटने के क्रम में विरजा एवं गंगा उभय नदियाँ यमुना के अंग में विलीन हो गयीं। इसीलिए यमुना को परिपूर्णतमा एवं परिपूर्णतम श्रीकृष्ण की प्रधान पटरानी कहा जाता है। अनन्तर एकबार जलपूर्ण यमुना निज प्रबल वेग से विरजा के प्रवाह को भेदकर उसे पृथक कर, स्वयं निकुंज द्वार से होकर निर्गत हो जाती है। तत्पश्चात् महानदी यमुना असंख्य ब्रह्मांडों को संस्पर्श करते हुए, गंगा के साथ संयुक्त हो जाती है।

वामनावतार कल्प में वामनदेव के वाम पदांगुष्ठ के नख द्वारा ब्रह्मांड कटाह निर्भिन्न जो विवर प्रकट हुआ, यमुना नदी उसी विवर पथ से होती हुई गंगा के साथ मिल जाती है। तत्पश्चात् भुवनमंडल में प्रविष्ट होकर भगवान विष्णु के वैकुंठलोक में पहुँचती है। इसके बाद ब्रह्ममंडल वैकुंठ से विनिर्गत होकर समस्त ब्रह्मलोक प्लावित करती हुई पुनः शत-शत देवलोकों में एक लोक से दूसरे लोक में पहुँचती है। अनन्तर अनन्त वेग से सुमेरु पर्वत के मस्तक (शिखर) पर पतित होती है एवं गिरिशृंग के समूहों को अतिक्रम कर समस्त गण्डगिरि को भेदकर सुमेरु के दक्षिण दिशा से होकर प्रवाहित होने लगती है। तत्पश्चात् यमुना और गंगा परस्पर विलग होकर गंगा हिमालय पर्वत की ओर एवं यमुना कालिन्द पर्वत की ओर गमन करती है। यमुना जब कालिन्द पर्वत से निर्गत होती है तब 'कालिन्दी' के नाम से विख्यात होती है। वेगवती यमुना कालिन्द गिरि के पादप्रदेश के सुदृढ़ गंडगिरि के समस्त तटों को भेदकर धरातल पर पतित होती है एवं वहाँ के समग्र क्षेत्रों को पवित्र करती हुई खांडव वन में उपस्थित होती है। परिपूर्णतम् श्रीकृष्ण को पतिरूप में पाने हेतु कालिन्द-नंदिनी यमुना ने परम दिव्य देवी देह धारणकर विकट तपस्या की थी। वे बहुत दिनों तक पितृगृह कालिन्द पर्वत पर कन्यारूप में मनुष्य देह में अवस्थित रहकर वेगमय जलरूप में व्रजमंडल में उपस्थित हुई हैं।

भूतल पर आर्विभूत होने के पूर्व तपबल से, देवलोक में ब्रह्मा की मानस सृष्टा देवकन्या सावित्री के गर्भ में यमुना ने जन्म ग्रहण किया। तत्पश्चात् देवी यमुना सूर्यदेव की कन्यारूप में सूर्यलोक में आर्विभूत हुई। विश्वकर्मा को 'संज्ञा' नाम की एक कन्या थी। सूर्यदेव के साथ संज्ञादेवी का विवाह संपन्न हुआ। सूर्य का तेज न सहन कर पाने से संज्ञा ने अपने चक्षुओं को बंद रखा था; जिससे क्रुद्ध होकर सूर्य ने संज्ञा को अभिशाप दिया; ''मुझे देखकर तुमने आँखों को बंद रखा है, इसी कारण तुम्हारे गर्भ से जो पुत्र जन्म

ग्रहण करेगा वह प्रजासंयम यम होगा यानि प्रजाजनों का संयम रखेगा।'' संज्ञा ने सूर्य का वह अभिसंपात सुनकर अपने स्वामी के प्रति चंचल दृष्टिपात किया था। इसीलिए सूर्य ने उनसे कहा था, ''मेरे प्रति चंचल दृष्टिपात करने से तुम्हारी जो कन्या होगी, वह चंचला नदी रूप में परिणत हो जाएगी।'' कालांतर में संज्ञा से एक पुत्र एवं एक कन्या ने जन्म ग्रहण किया। पुत्र का नाम प्रजासंयम 'यम' एवं कन्या का नाम हुआ 'यमुना'(जमुना)। यही सूर्यकन्या बाद में नदीरूप में परिणत हो गयी। यमुना नदी का उद्‌गम कालिन्द पर्वत है।

ऋग्वेद में विवस्वान (सूर्य) एवं सरण्यु (संज्ञा) के संतान यम-यमी (यमुना) ये दोनों जुड़वाँ भाई-बहन हैं। यम द्वारा यमी को सहवास हेतु आग्रह करने पर यमी उसे परित्याग कर तपस्या के लिए चली गयी। महाभारत में लिखित है कि कार्त्तिक मास के शुक्ला द्वितीया तिथि को यमुना ने निज भ्राता यम को स्वगृह में पूजा कर आहार सामग्री द्वारा परितृप्त किया था। इसी कारण यम-द्वितीया या भ्रातृ-द्वितीया तिथि आज भी भारतवर्ष के घर-घर में प्रसिद्ध है एवं इसका पालन किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि उस दिन भगिनी (बहन) के हाथ से आहार ग्रहण करने पर भ्राता का सर्वप्रकारेण मंगल होता है।

परात्पर पुरूषोत्तम श्रीकृष्ण द्वापर में भगवत् लीला के नायक होकर अवतीर्ण होंगे, ऐसा संकल्प करने पर, बाद में श्रीराधा ने श्रीकृष्ण से कहा, ''जिस जगह वृंदावन, यमुना नदी एवं गोवर्धन पर्वत नहीं होंगे, वहाँ मेरे मन को शांति नहीं मिलेगी।'' तब स्वयं भगवान श्रीहरि ने निज गोलोकधाम में से चौरासी कोस भूमि, गोवर्धन गिरि एवं यमुना को धरती पर प्रतिनियुक्त किया। देवी यमुना, श्रीराधिका की अन्यतमा अंतरंगा सखी 'दक्षिणा' थी। यमुना दक्षिणा रूपी कालिन्दी नाम से प्रवाहित हुई एवं 'लक्षणा' यथाक्रम से विरजा नदी हुई। यमुना कालिन्दी रूप में मानव शरीर धारण कर पितृगृह में रहकर तप प्रभाव से वेगवान जलरूप में व्रजमंडल में उपस्थित हुई। शुभद् मथुरा-वृंदावन के समीप परम रमणीय नदी तट पर महावन के पास गोकुल में प्रविष्ट होकर यमुना सुंदरी ने श्रीकृष्ण के साथ संगबद्ध-भावेन रास की अभिलाषा से निज आवास को निर्दिष्ट किया है। व्रज से होकर जब वे प्रवाह रूप में चली, तब उन्हें अत्यंत व्रज-विरह पीड़ा हुई। अस्तु वे प्रेमानंदसिक्त नयनों से आकुलित होकर पश्चिम वाहिनी हो गयी। तत्पश्चात् निज वेग से तीन बार व्रजमंडल की परिक्रमा कर नमस्कार करते हुए वहाँ के क्षेत्रों को पवित्र करती हुई, तीर्थराज प्रयाग में पहुँचकर जब गंगा से संयुक्त होकर समुद्र की तरफ जाने को उद्यत हुई तब स्वर्ग के देवगणों ने जयघोष के साथ-साथ पुष्पवृष्टि किया था। सागर में पहुँचकर गद्‌गद् स्वर में यमुना ने गंगा से हृदयासिक्त वाक्य कहा, ''हे गंगे! तुम धन्य हो, तुम कृष्ण चरण-कमल से उद्‌भूत हो, सर्वलोक में पूजित हो और समस्त ब्रह्मांड की पावनी हो। मैं ऊर्ध्व दिशा में हरिपुर गोलोक में जा रही हूँ तुम भी मेरे साथ प्रत्यागमन करो। तुम्हारे समान पवित्र तीर्थ है नहीं और होगा भी नहीं। हे गंगे! तुम सर्वतीर्थमयी हो; अतएव, मैं तुम्हें प्रणाम करती हूँ। मैंने तुमसे यदि कभी अभद्र वाक्य कहा हो, तो मुझे क्षमा करना।'' यमुना की बातें सुनकर गंगा ने कहा, ''हे यमुने! तुम भी श्रीकृष्ण की वामांगसंभूता हो, इसलिए तुम भी सर्वब्रह्मांड पावनी और धन्य हो। तुम परमानंदरूपिणी हो, सर्वलोक पूजिता हो और परिपूर्णतमा हो। विशेषरूप से तुम परिपूर्णतम् महात्मा श्रीकृष्ण की पटरानी के रूप में जानी जाती हो; अतएव हे कृष्णे! मैं भी तुम्हें प्रणाम करती हूँ। तुम तीर्थ एवं देवगणों के लिए भी दुर्लभ हो, गोलोक में भी तुम सुलभ नहीं हो। मैं श्रीकृष्ण की आज्ञा से मंगलकारी रूप में पाताल को गमन कर रही हूँ, किन्तु तुम विरह-व्यथा से गमन करने में असमर्थ हो रही हो। पुनः व्रजपुर के रासमंडल में पुनर्मिलन होगा। हे हरिप्रिये! मैंने यदि तुमसे कुछ अप्रिय कहा हो, तो मुझे क्षमा करना।'' इसप्रकार परस्पर प्रणाम आदान-प्रदान कर, गंगा और यमुना पुनः प्रवाहित होने लगी। तत्पश्चात् सुरनदी गंगा समस्त लोकों को पवित्र करती हुई पाताल में प्रविष्ट होकर शेषनाग के भोगवती वन में 'भोगवती' नाम से विख्यात हुई। त्रिलोचन शंकर एवं शेषनाग ने उनके जल को अपने-अपने मस्तक पर धारण किया। तदन्तर अति वेगवती यमुना स्ववेग से सप्तसागर मंडल को भेदकर सप्तद्वीपमयी पृथ्वी को आप्लुत करती हुई स्वर्णमयी भूमि के मध्य से इहलोक में उपनीत हुई। तत्पश्चात् उच्छलित जलवेग से अनेक लोकों के पर्वतों के कटि-प्रदेश के चट्टानों को भेदकर द्रुतगति से उसके शिखर प्रदेश में उद्‌भवित हुई एवं क्रमशः ऊर्ध्वलोक होकर स्वर्ग

गमन करने के बाद ब्रह्मलोक होते हुए अखिल सुरलोक पर्यन्त समस्त लोकों में परिव्याप्त हो गयी। फिर ब्रह्मद्रवयुक्त परिपादस्थान ब्रह्मांड-रंध्र में उपस्थित होकर पुनः गोलोक में गमन किया। तब देवगण आनंदपूर्वक पुष्पवृष्टि करने लगे।

द्वापर युग में एकबार भावोन्मत्त बलराम ने जलक्रीड़ा हेतु यमुना का अपने पास आह्वान किया। किन्तु यमुना द्वारा बलदेव का कथन अनसुनी करने पर क्रोधित बलराम ने हलायुध द्वारा खींचकर यमुना को अपने निकट लाया एवम् स्वेच्छापूर्वक यमुना को यत्र-तत्र अनुगमन करने को बाध्य किया। इसी कारण यमुना नदी ने अपना देवी स्वरूप नारी मूर्ति धारण कर बलदेव के पास क्षमा-प्रार्थना किया -(हल द्वारा बलराम जिस पथ से यमुना को खींचकर लाये थे, उसी पथ पर वह आज भी प्रवाहित है)। बहुत अनुनय के पश्चात् बलदेव ने संतुष्ट होकर यमुना को क्षमा कर दिया। तब उसके पश्चात् बलराम ने गोपियों के संग, यमुना में जलक्रीड़ा किया।

यमुना नदी वसुदेव के लिये मार्ग प्रशस्त कर दिया

इन्द्रप्रस्थ निर्माण के पश्चात् श्रीकृष्ण ने कई दिनों तक गोकुल में निवास किया। इसी समय एकबार श्रीकृष्ण और अर्जुन ने, यमुना तट पर भ्रमण के दौरान एक सुन्दर रमणी को श्रीकृष्ण हेतु तपस्यारत देखा। परिचय लेने पर श्रीकृष्ण को ज्ञात हुआ कि यह देवी कालिन्दी हैं। कालिन्दी ने अपना परिचय प्रदान कर श्रीकृष्ण से पाणिग्रहण हेतु आग्रह किया। तत्पश्चात् श्रीकृष्ण इन्हें लेकर द्वारका गये और इनके साथ परिणय-सूत्र में बँध गये। इस घटना के पश्चात् खांडव दहन हुआ। कालिन्दी के दस पुत्र थे – श्रुत, कवि, वृष, वीर, सुबाहु, भद्र, शांत, दर्श, पूर्णमास और सोमक – (भागवत १०/६१/१४), दूसरी तरफ सूर्यतनया यमुना अद्रिका नामक अप्सरा के गर्भ से जन्म ग्रहण कर देवराज इन्द्र की आज्ञा से शक्तृपुत्र महर्षि पराशर हेतु दाशराज गृह में सत्यवती (मत्स्यगंधा) रूप में प्रतिपालित हुई। यही वेदव्यास श्रीकृष्ण द्वैपायन की जननी है। भगवत् स्वरूप के पथ में ईश्वर-कोटि के क्षेत्र में इसी स्थान पर साधना की पूर्णता लक्षित होती है। नित्य परिचय रूप से योगमाया के योगतत्त्व पर आसीन यमुना देवी कालिन्दी रूप में श्रीकृष्ण की महिषी हैं, पुनः भगवत् लीला माधुर्य में योगतत्त्व पर आसीन यमुना, सत्यवती रूप में महाभारत की एक अद्वितीय देवी चरित्र हैं। एक तरफ भार्या और दूसरी तरफ माता, ये दोनों व्यक्तित्व ही कृष्ण रूप के अंतर्गत एवं अंतरंग है एवं विश्वप्रकृति तत्त्व में यमुना, नदी रूपिणी है। एक ही काल एवं उसी युग में भगवत् लीला माधुर्य में आप्लुत देवी यमुना का चरित्र एक आश्चर्यजनक विज्ञानमंडित विस्मय है।

यौगिक तात्पर्य – श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव नवजात श्रीकृष्ण को गोद में लेकर इसी यमुना नदी को पैदल पार कर रहे थे, यमुना ने उनके लिये मार्ग प्रशस्त कर दिया। सृष्टितत्त्व के योगमार्ग में यमुना हुई गोलोक में उद्भूत नदी रूपी देहाभ्यंतरस्थ सुषुम्ना की एक विशेष नाड़ी, जो जड़ प्रकृति को वहन कर गंगा रूपी चैतन्य प्रकृति चेतना में सम्मिलित करती है। फलस्वरूप, सत्ता की जड़ प्रकृति से उत्पन्न चेतना क्रमशः ऊर्ध्वगामी होकर गंगारूपी नाड़ी से सुषुम्ना पथ होकर सत्ता को चैतन्य प्रकृति में रूपान्तरित करती है। गंगा की एक धारा सरस्वती ब्रह्मबिंदुरूपी महाज्ञान प्रदायिनी ब्रह्मनाड़ी; ब्रह्ममार्ग अथवा अवधूतीन् मार्ग योगशास्त्र में प्रसिद्ध है। जीवात्मारूपी वसुदेव देहरूपी माया कारागार में आबद्ध हैं। कृष्ण महाप्राणरूपी, वासुदेव स्थिर प्राण चैतन्य सम ब्रह्माणु सदृश आत्मा देहाभ्यंतरस्थ रथ के भगवत् स्वरूप रथी है; इसी वासुदेव को गोद में लेकर वसुदेव जड़ प्रकृति चेतना के पथरूपी यमुना नदी या नाड़ी को अतिक्रम कर गोकुल में अर्थात् दिव्य चेतना के मंडल में प्रेरण करते हैं। इसी कारण यमुना को मुक्तिगामी, पतितोद्धारिणी नाम से विभूषित किया गया है। यमुना में स्नान करने से स्वर्ग का पथ उन्मुक्त होता है। सुषुम्ना नाड़ी मध्य, दक्षिणांश में यमुना नदी, वज्रा नाड़ी में गंगा एवं चित्रा और ब्रह्मनाड़ी में सरस्वती नदी प्रत्यक्ष ज्ञान-विज्ञान प्रदायिनी है।

इस क्षेत्र में डा. गोपीनाथ कविराज के 'श्रीकृष्ण प्रसंग' नामक ग्रंथ से यमुना के विषय में कुछ प्रसंग उद्धृत करती हूँ – ''गोवर्धन पर्वत अप्राकृतिक लीला का एक विशिष्ट क्षेत्र है। साथ ही इससे निश्चित रूप से मानस गंगा का

सविशेष संबंध है। वृंदावन-तल-वाहिनी यमुना स्थान भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। विरजा भेद न होने पर जिस प्रकार से वैकुंठधाम में प्रवेश संभव नहीं है, ठीक उसी प्रकार यमुना भेद न होने पर स्वयं भगवान के धाम में प्रवेश कर पाना असंभव है। आध्यात्मिक दृष्टि से यमुना सुषुम्ना में स्थानापन्न, यह प्रसंग वृहत् संहिता में स्पष्ट रूप से उल्लिखित है। सुषुम्ना का आश्रय न करने पर जैसे योगी का संचार संभव नहीं हो पाता, ठीक उसी प्रकार यमुना का आश्रय न लेने पर भगवान का नित्य-लीला स्थान आत्म-प्रकाश नहीं हो पाता। यमुना सूर्य-कन्या के नाम से प्रसिद्ध है, कालात्मक यम भी सूर्यतनय हैं। फलस्वरूप कालातीत नित्यधाम कालशक्ति यमुना के उसपार अवस्थित है – यही स्वाभाविक है।''

–हिन्दी अनुवाद : श्रीविमलानंद

–हरि ॐ तत्सत्–